FLUOROSCEIN ANGIOGRAPHY
फ्लूरोसिन एंजियोग्राफी

सामान्य जानकारी

यह विशिष्ट जाँच प्रक्रिया है, जिसमें आँख के अंदरूनी हिस्से (पर्दे) की विशिष्ट तरीके से फोटोग्राफी की जाती है। इसमें सोडियम फ्लूरोसिन नाम की डाई (रंजक) शिरा (Vein)/नस में इंजेक्ट कर क्रमवार आँख के अन्दरूनी हिस्से (पर्दे) की विशिष्ट उपकरणों द्वारा फोटो खींची जाती है। इस प्रक्रिया के द्वारा पर्दे व आँख के अन्य अन्दरूनी हिस्से (कोरोइड) की बीमारियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

प्रक्रिया के दुष्प्रभाव : हालाँकि यह प्रक्रिया अत्यधिक सुरक्षित है, फिर भी कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं :

1. सबसे आम दुष्प्रभाव है – ''जी मिचलाना व उल्टी की शिकायत होना''। यह 3 से 5% लोगों में हो सकता है। हालाँकि यह कुछ देर (कुछ मिनटों) तक ही रहता है। ऐसे में मरीज को धीरे-धीरे व गहरी साँस लेने की सलाह दी जाती है।
2. कई बार नस में इजेक्ट की जाने वाली डाई त्वचा में भी चली जाती है। इस वजह से उस जगह पर दर्द होता है। ऐसे में शरीर के उस भाग की त्वचा पर ठंडा सेक (बर्फ का) कुछ मिनटों (10-12 मिनटों) तक किया जाता है। कभी-कभी संवेदनशील त्वचा होने पर त्वचा नें घाव भी हो सकता है तथा गाँठ भी बन जाती है।
3. **एलर्जिक रिएक्शन** : बहुत कम लोगों (लगभग 1%) में एलर्जी की शिकायत हो सकती है। ऐसे में मरीज को खुजली व शरीर पर लाल धब्बे हो सकते हैं। कई बार यह एलर्जी बहुत ही खतरनाक ढंग से प्रस्तुत होती है, जिसमें साँस की नली अवरुद्ध हो जाती है तथा ''एनाफाइलेक्सिस'' हो जाता है। बहुत ही कम (1 in 2,20,000) केस में मृत्यु भी हो सकती है।
4. मूत्र में पीलेपन की शिकायत होना : यह करीब 36 घंटे तक रह सकता है।
5. इस प्रक्रिया से कुछ जाँचें गलत परिणाम भी दे सकती हैं व ऐसा जाँच प्रक्रिया के 48 घंटों में हो सकता है।

अनुमति-पत्र

मैं पूर्ण होश-हवास में बिना किसी दबाव के अपने मरीज को आँख के फ्लूरोसिन एंजियोग्राफी करवाने की अनुमति देता हूँ। मुझे इसके फायदे व नुकसान के बारे में बता दिया गया है।

हस्ताक्षर